प्रो० डॉ० लाल केश्वर सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
कि० सि० म० महाविद्यालय, औरंगाबाद (बिहार)
बी० ए० पार्ट-1 दिनांक 09-06-2021
समय 11.30-12.15

विषय: चन्द्रगुप्त नाटक में सिंहरण का चरित्र-चित्रण कीजिए

'चन्द्रगुप्त' नाटक में सिंहरण ही एक ऐसा पात्र है, जो कि वास्तव में सच्ची वीरता और क्षत्रियत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ ही साथ उसके चरित्र में कर्तव्य परायणता और संघर्षमय प्रकृति का भी योग है। समस्त पुरुष-पात्रों में सिंहरण ही का चरित्र समय और परिस्थिति के अनुकूल बन पड़ा है।

सिंहरण मालव गण के राष्ट्रपति का पुत्र है, जो कि वास्तव में सच्चा वीर है। उसकी वीरता और निर्भिकता उसके प्रत्येक संवाद में दृष्टिगत होती है। वह तक्षशिला विश्वविद्यालय का छात्र है, जहाँ उसने राजनीति अर्थशास्त्र और शस्त्र शास्त्र की शिक्षा चाणक्य-जैसे महान गुरु से ग्रहण की है। हमें सिंहरण के दर्शन नाटक के प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में होते हैं, जहाँ कि वह चाणक्य से वार्तालाप करते हुए दृष्टिगत होता है, जिससे उसके तक्षशिला के स्नातक होने का परिचय मिलता है। इसके साथ ही साथ यह भी पता चलता है कि चाणक्य का चन्द्रगुप्त की तरह अन्धानुकरण करने वाला नहीं है, बल्कि उसका अपना एक अलग व्यक्तित्व है। वह दूरदर्शी है, वह जानता है कि किस परिस्थिति में उसका क्या कर्तव्य है और इसलिए वह चाणक्य को सतर्क करता हुआ कहता है—

"आर्यावर्त का भविष्य लिखने के लिए, कुचक्र और प्रताड़ना की लेखनी और मसि प्रस्तुत हो रही है। उत्तरापथ के खण्ड राज्य द्वेष से जर्जर हैं। शीघ्र भयानक विस्फोट होगा।"

इससे भी ज्ञात होता है कि घटनाओं के प्रति वह कितना सतर्क है। सिंहरण एक कर्मशील पुरुष है, जिसके रक्त में बलिदान गुंजरित है जिसके स्नायु-तन्तुओं में देश की दुर्दशा-प्रसूत पीड़ा मरोड़ कर कोलाहल करती रहती है, जिसके शब्दों में बादल की गम्भीर गर्जना भरी है तथा जिसकी भावनाओं में पर्वत की स्थिरता है। मगध-साम्राज्य में षड्यन्त्र रचने की सूचना पहले ही गुरुकुल में मिल जाती है। वह पहले ही जानता है कि आम्भीक (गान्धार का राजकुमार) यवनों से सन्धि कर चुका है, इसलिए उसको देखते ही वह उससे घृणा करने लगता है। यद्यपि आम्भीक राजकुमार है और सिंहरण एक स्नातक, लेकिन फिर भी वह राजकुमार के प्रश्नों के उत्तर देना अपने सम्मान के विरुद्ध समझता है क्योंकि उसकी दृष्टि में आम्भीक देशद्रोही है। इसके विपरीत स्नातक होते हुए भी वह अपने व्यक्तित्व को अधिक महत्व देता है, क्योंकि वह स्वतन्त्र है, उसे अपने देश की चिन्ता है, उसके मन में यवनों के प्रति आन्तरिक घृणा है। वह अपना कर्तव्य और कर्मक्षेत्र अच्छी तरह जानता है।

इसीलिए वह आम्भीक के प्रश्नों के उत्तर देना पसन्द नहीं करता और उसकी विनम्रता अक्खड़ता का रूप धारण कर लेती है और उसके उत्तरों में है, व्यंग्यात्मक ऐंठन।

" आम्भीक : कैसा विस्फोट है ? युवक तुम कौन हो ?
सिंहरण : एक मालव।
आम्भीक : नहीं विशेष परिचय की आवश्यकता है।
सिंहरण : तक्षशिला-गुरुकुल का एक छात्र।
आम्भीक : देखता हूँ कि तुम दुर्विनीत भी हो।"

इस वार्तालाप में जब आम्भीक उससे उसका परिचय पूछता है, तो वह केवल 'एक मालव' कह कर ही अपना परिचय देता है, बाद में आम्भीक के हठ करने पर भी वह इतना ही बतलाता है कि वह तक्षशिला-गुरुकुल का एक छात्र है। इससे ही हमें पता चलता है कि उसमें एक आत्मबल है। उसे अपने पर विश्वास और फिर भारतीय-संस्कृति की उस पूर्ण ज्योति का आभास है, जो उस समय यवन-सान्धियों में संकुचित आशाओं से धुँधली हो रही है। इस प्रकार तक्षशिला के गुरुकुल में ही उसके व्यक्तित्व के दोनों पक्ष स्पष्ट हो जाते हैं। पहला देशभक्त मालव का और दूसरी ओर वह अलका की ओर आकर्षित है।

'चन्द्रगुप्त' नाटक में हम जब भी सिंहरण को देखते हैं तो सदैव यही पाते हैं कि उसके मस्तिष्क

क्रमशः →

Scanned with CamScanner